अर्थालङ्कारः उपमा का सामान्य लक्षण देते हुए पूर्णोपमा को स्पष्ट करें

उपमा → "साधर्म्यमुपमा भेदे"

अर्थात् (उपमान और उपमेय) का भेद होने पर दोनों (के गुण, क्रिया, धर्म) की समानता का वर्णन उपमालङ्कार है।

"समान एकः तुल्यो वा धर्मो गुणक्रियादिरूपो ययोः (उपमानोपमेययोः) तौ सधर्माणौ तयोर्भावः साधर्म्यम् उपमानोपमेययोः समानधर्मेण सह संबन्ध"

बालबोधिनीकार लिखते है साधर्म्य एक सम्बन्ध विशेष है जिसके लिए प्रतियोगी और अनुयोगी की आवश्यकता होती है यहाँ "साधारणधर्मः प्रतियोगी उपमानमुपमेयं चेति द्वावप्यनुयोगिनाविति गृहाण"

वृत्ति मे आचार्य मम्मट स्पष्ट करते हैं, कि साधर्म्य रूप सम्बन्ध उपमान और उपमेय का ही होता है न कि कार्यकारणादि का इसलिए उन्हीं का (उपमानोपमेय) समान धर्म से सम्बन्ध होना उपमालंकार है।

अतएव लक्षण वाक्य का साधर्म्य पद उपमान-उपमेय का आक्षेप कराता है।

"लक्षण वाक्ये उपमानोपमेययोराक्षेपः साधर्म्यस्य निराकाङ्क्षत्वप्रतिपत्तिमात्र फलको न तु कार्यकारणादिकयोरपि तादृशं साधर्म्यम् अस्ति।"

"भेद ग्रहणमनन्वय व्यवच्छेदाय"

'साधर्म्यमुपमा भेदे' में भेद शब्द का उपादान उपमा से अनन्वय अलङ्कार का भेद स्पष्ट करने के लिए रखा है।

अनन्वय अलङ्कार में उपमान और उपमेय में भेद नहीं होता।

"उपमानोपमेयत्वे एकस्यैवैकवाक्यगे अनन्वयः"

अर्थात् एक ही वस्तु के एक वाक्य में उपमान तथा उपमेय रूप होने पर अनन्वय अलङ्कार होता है। ~~अर्थात् अनन्वय~~

जैसे → '~~नितम्बी~~' नितम्बिनी सा नितम्बिनीव' ~~इस~~

इस प्रकार 'भेद' शब्द उपमा से अनन्वय की व्यावृत्ति कराता है।

Scanned with CamScanner

उपमा के चार अङ्ग होते हैं → (1) उपमान (2) उपमेय (3) साधारण धर्म
(4) वाचक शब्द

उपमान → साधारण धर्म की दृष्टि से प्रसिद्ध, अथवा उत्कृष्ट या अप्रस्तुत
उपमेय → साधारण धर्म का वर्णनीय, अथवा निकृष्ट या प्रस्तुत
धर्म → दोनों में समान रूप से रहने वाला। क्रिया, गुणरूप
वाचकशब्द → इव यथा आदि

जहाँ ये चारों शब्दतः स्पष्ट हों वहाँ पूर्णा तथा एक, दो अथवा तीन के लुप्त हो जाने पर लुप्तोपमा कहलाती है।

पूर्णोपमा

पूर्णोपमा छः प्रकार की होती है

" श्रौत्यार्थी च भवेद्वाक्ये समासे तद्धिते तथा।"

आचार्य मम्मट प्रतिपादित करते हैं जब यथा इव वा आदि शब्द से साधर्म्य की प्रतीति हो जाती है वहाँ श्रौती तथा जहाँ तुल्य आदि शब्दों से साधर्म्य की प्रतीति अर्थवशात् आक्षेपलभ्य होती है वहाँ आर्थी उपमा होती है।

यह श्रौती और आर्थी 3-3 प्रकार की होती है।

(1) जहाँ उपमानादि चारों असमस्त होते हैं वहाँ उपमा वाक्यगत होती है।
(2) जहाँ किन्हीं दो का भी समास होता है वहाँ समासगत होती है।
(3) जहाँ उपमानवाचक से तद्धित प्रत्यय का योग होता है वहाँ उपमा तद्धितगत होती है

(1) वाक्यगा श्रौती → यहाँ यथा आदि शब्दतः उपात्त होते हैं और समस्त नहीं होते →

स्वप्नेऽपि समरेषु त्वां विजयश्रीर्न मुञ्चति।
प्रभावप्रभवं कान्तं स्वाधीनपतिका यथा॥

यहाँ स्वाधीनपतिका 'उपमान' 'विजयश्री' उपमेय 'अपरित्याग' साधर्म्य यथा 'वाचकशब्द' है। चारो अवयव असमस्तरूप से विद्यमान होने से वाक्यगा श्रौती है

② वाक्यगा आर्थी → यहाँ समादि शब्द प्रयुक्त होते हैं तथा उनके अर्थ के परामर्श से अर्थात उपमान उपमेय प्रतीत्यनन्तर अनुसन्धान द्वारा दोनों के साधर्म्य की प्रतीति होती है।

जैसे → चकितहरिणलोललोचनायाः क्रुधि तरुणारुणतारहारिकान्ति।
सरसिजमिदमाननं च तस्याः समिति चेतसि सम्मदं विधत्ते॥

यहाँ 'सरसिज' उपमान है, 'आनन' 'उपमेय' 'अरुणकान्ति' साधारण धर्म और 'सम' शब्द उपमावाचक है, 'सम' शब्द के साथ समासन होने से यह वाक्यगा उपमा है। यहाँ शब्द से 'कमल' और 'मुख' सदृश हैं केवल यह प्रतीति होती है फिर अनुसन्धान द्वारा दोनों के साधर्म्य की प्रतीति होती है अतः यहाँ वाक्यगा आर्थी उपमा है।

③ समासगा श्रौती → जहाँ उपमानादि चार अङ्गों में से न्यूनतम दो का समास होता है। "इवेन नित्यसमासो विभक्त्यलोपः पूर्वपदप्रकृतिस्वरत्वं चेति" इस वार्तिक से इव शब्द योग में नित्य समास होता है जैसे →
अत्यायतैर्नियमकारिभिरुद्धतानां दिव्यैः प्रभाभिरनपायमयैरुपायैः।
शौरिर्भुजैरिव चतुर्भिरदः सदा यो लक्ष्मीविलासभुवनैर्भुवनं बभार॥

यहाँ 'भुज' उपमान 'उपाय' उपमेय, 'अत्यायतत्व' धर्म और 'इव' वाचक शब्द है। 'भुजैरिव' में 'इवेन०' वार्तिक से उपमान और वाचक शब्द का नित्य समास है अतः समासगा श्रौती है।

④ समासगा आर्थी → जहाँ
"अवितथमनोरथपथप्रथनेषु प्रगुणगरिमगीतश्रीः।
सुरतरुसदृशः स भवानभिलषणीयः क्षितीश्वर, न कस्य॥"
यहाँ 'सुरतरु' उपमान, 'भवान्' उपमेय, 'प्रगु०गरिमगीतश्रीत्व' साधारण धर्म 'सदृशः' वाचक शब्द है। उपमान और उपमेय के पर्यालोचन से 'सर्वाभिलषणीयत्व' आक्षिप्त होता है। उपमान और वाचक शब्द का समास होने से समासगा आर्थी पूर्णोपमा है।

Scanned with CamScanner

(5) श्रौती तद्धितगा → जहाँ 'तत्र तस्येव' से वत् प्रत्यय का प्रयोग होता है वहाँ श्रौती

(6) आर्थी तद्धितगा → जहाँ 'तेन तुल्यं क्रिया चेत्' से वत् प्रत्यय का विधान होता है वहाँ आर्थी तद्धितगा होती है।

जैसे → "गाम्भीर्यगरिमा तस्य सत्यं गङ्गाभुजङ्गवत्।
दुरालोकः स समरे निदाघाम्बररत्नवत् ॥"

यहाँ पूर्वार्द्ध में 'गङ्गाभुजङ्गवत्' में 'तत्र तस्येव' से वत् प्रत्यय है "गङ्गाभुजङ्ग" उपमान 'वत्' वाचक शब्द 'गाम्भीर्य गरिमा' साधारण धर्म 'तस्य' उपमेय है। अतः तद्धितगा श्रौती

उत्तरार्द्ध में 'निदाघाम्बररत्न' उपमान है, 'स' उपमेय, 'दुरालोकत्व' साधारणधर्म 'अम्बररत्नवत्' में तुल्यार्थ 'तेन तुल्यं०' वति प्रत्यय वाचक शब्द

अतः तद्धितगा आर्थी पूर्णोपमा का उदाहरण है।